*Enhanced Edition
NEP 2020 Guidelines

ज्ञान सरोवर हिंदी व्याकरण

अध्यापक सहायक-पुस्तिका

6

YELLOW BIRD PUBLICATIONS PVT. LTD.
EDUCATIONAL PUBLISHER

ज्ञान सरोवर हिंदी व्याकरण कक्षा-6

अध्याय-1 – भाषा, बोली, लिपि और व्याकरण

(क) 1. (ब), 2. (स), 3. (ब) 4. (ब)

(ख) 1. व्यापक 2. प्रदेश 3. दाई, बाई 4. व्याकरण 5. लिपि

(ग) 1. ✗ 2. ✓ 3. ✓ 4. ✓ 5. ✗

(ङ) 1. अपने विचारों को प्रकट करने और दूसरे के विचारों को ग्रहण करने के लिए हमें एक साधन चाहिए और वह साधन 'भाषा' है।

भाषा के भेद:

(i) मौखिक: जब मनुष्य बोलकर उपस्थित व्यक्तियों के समक्ष अपने विचार प्रकट करता है, तब वह भाषा के मौखिक अथवा कथित रूप का प्रयोग करता है।

(ii) लिखित: मौखिक भाषा को जब लिखकर प्रकट किया जाता है, तो यह भाषा का लिखित रूप कहलाता है।

2. भाषा के क्षेत्रीय रूप को 'बोली' कहते हैं।

3. 'व्याकरण' वह शास्त्र है, जो हमें किसी भाषा की शुद्धता के नियम सिखाता है।

(च) 1. आँख 2. चंद्रमा 3. आशीर्वाद 4. संगति 5. गरीबी

विविध:

1. हिंदी, पंजाबी, अंग्रेजी
2. हिंदी, पंजाबी, अंग्रेजी, संस्कृत
3. हिंदी

अध्याय-2 – वर्ण विचार

(क) 1. (ब), 2. (स), 3. (द) 4. (अ)

(ख) 1. वर्ण 2. 11, 33 3. इ, ऋ 4. नासिका 5. चार

(ग) 1. ✓ 2. ✗ 3. ✓ 4. ✓ 5. ✓

(घ) 1. आ, ई, ऊ, ए, ऐ, ओ, औ

2. ऊष्म: श्, ष्, स्, ह्

3. अनुनासिक– ँ अनुस्वार ं

4. हलंत – ् विसर्ग – :

5. ा ि ी ु ू ृ े ै ो ौ

(ङ) 1. भाषा की उस छोटी-से-छोटी ध्वनि को 'वर्ण' कहते हैं, जिसके और खंड नहीं हो सकते।

2. जिस वर्ण का उच्चारण करते समय, किसी अन्य ध्वनि की सहायता की आवश्यकता नहीं होती है, उसे 'स्वर' कहते हैं।

3. जिन स्वरों के उच्चारण में बहुत कम समय लगता है, वे 'ह्रस्व स्वर' कहलाते हैं।

जिन स्वरों के उच्चारण में ह्रस्व स्वर से दुगुना समय लगे, वे 'दीर्घ स्वर' कहलाते हैं।

4. जिन वर्णों के पूर्ण उच्चारण के लिए स्वरों की सहायता ली जाती है, वे 'व्यंजन' कहलाते हैं।

भेद: (i) स्पर्श (ii) अंतस्थ (iii) ऊष्म (iv) संयुक्त (v) आगत

5. जिन व्यंजनों का उच्चारण करते समय मुख के दो अंग परस्पर स्पर्श करते हैं, उन्हें 'स्पर्श व्यंजन' कहते हैं। ये कुल 25 होते हैं।

(च) 1. रंग 2. गंगा 3. आँख 4. संगीत 5. दाँत

6. आवश्यकताएँ 7. तितलियाँ 8. मछलियाँ 9. गंदगी 10. पतंगें

विविध:

(क) 1. 'प्लुत स्वर' के उच्चारण में ह्रस्व स्वर से तीन गुना समय लगता है। इसलिए इसके आगे तीन का अंक (3) लिख देते हैं। इस स्वर का प्रयोग हिंदी में केवल 'ओ3म्' शब्द में ही देखने को मिलता है। 'ओ3म्' में 'ओ' प्लुत स्वर है।

2. 'अनुस्वार' का उच्चारण 'म्' तथा 'न्' के समान होता है और नाक से होता है। उदाहरण– संगति, संगीत। जबकि

'अनुनासिक' का प्रयोग तब होता है, जब किसी वर्ण का उच्चारण नासिका और मुख दोनों से किया जाता है। उदाहरण– हँसना, माँ।

अनुस्वार का चिह्न ं होता है जबकि अनुनासिक का चिह्न ँ होता है।

अध्याय-3 – शब्द विचार

(क) 1. (अ), 2. (ब), 3. (स), 4. (ब)

(ख) 1. स्वतंत्र 2. तत्सम 3. समान 4. अनेकार्थी 5. विकारी

(ग) 1. ✓ 2. ✓ 3. ✓ 4. ✗ 5. ✗

(घ) 1. हाथ 2. हँसी 3. मोर 4. सावन 5. बाघ

(ङ) 1. हलवाई, चश्मा, डॉक्टर, इलाज

2. गायब, शराब, मौत

3. लम्बोदर, दशानन, पंकज

4. देवालय, राजपुरुष, हिमालय

(च) 1. निश्चित अर्थ को व्यक्त करने वाले वर्णों के समूह को 'शब्द' कहते हैं।

2. वर्णों का सार्थक समूह स्वतंत्र रहने पर शब्द तथा वाक्य में प्रयुक्त होने पर पद कहलाता है।

3. संस्कृत के वे शब्द, जो हिंदी में ज्यों-के-त्यों प्रयुक्त होते हैं, 'तत्सम् शब्द' कहलाते हैं। जैसे: अश्व, कूप, कर्ज आदि।

संस्कृत भाषा के दो शब्द जो अपने रूप परिवर्तन कर हिंदी में मिल गए हैं, 'तद्भव' शब्द कहलाते हैं। जैसे: घड़ा, घोड़ा, घी, सावन आदि।

4. हिंदी में प्रचलित वे शब्द, जो देश की विभिन्न बोलियों द्वारा हिंदी भाषा में स्थान पा गए हैं, 'देशज शब्द' कहते हैं। जैसे: गाय, बेटा, रोटी आदि।

जो शब्द संसार की विभिन्न भाषाओं से हिंदी भाषा में आ गए हैं तथा हिंदी भाषा में थोड़े बहुत परिवर्तन के साथ उन्हें अपना लिया है, वे 'आगत या विदेशी शब्द' कहलाते हैं। जैसे: किस्सा, बटन, मोटर, कुरता आदि।

वाक्यों में प्रयोग करने पर कुछ शब्दों के रूप में परिवर्तन हो जाता है, जैसे: लड़का, लड़के, लड़कों आदि। यह परिवर्तन लिंग, वचन और कारक के अनुसार होता है। ऐसे में जिन शब्दों के रूप में परिवर्तन हो जाता है, उन्हें 'विकारी शब्द' तथा जो शब्द प्रत्येक परिस्थिति में अपरिवर्तनीय रहते हैं, उन्हें 'अविकारी शब्द' कहते हैं।

विविध:

1. काल: समय, मृत्यु, यमराज हल: समाधान, खेत जोतने का यंत्र
2. संकर: रेलगाड़ी, टिकटघर, मोटरगाड़ी, घोड़ागाड़ी, मच्छरदानी
3. जल: पानी, नीर, वारि नभ: अंबर, आकाश, आसमान

4. तत्सम: अंनुष्ठ, व्याघ्र, गृह, उच्च, रात्रि, कपोल, कर्ण
5. तद्भव: घी, कुआँ, घड़ा, किसान, कुम्हार, गधा, सावन

अध्याय-4 – शब्द निर्माण

(क) 1. (द), 2. (ब), 3. (ब), 4. (ब)

(ख) 1. ✗ 2. ✗ 3. ✗ 4. ✓ 5. ✓

(ग) 1. अजर, अमर 2. अवगुण, अवतार
3. निर्भय, निरपराध 4. दु:शासन, दुष्कर्म 5. अनजान, अनहोनी

(घ) 1. चढ़ाई, लिखाई 2. ठहराव, लगाव 3. पहाड़ी, लालची
4. दयावती, पुत्रवती 5. अपनत्व, मनुष्यत्व

(ङ) 1. जो शब्दांश मूल शब्द से पहले जुड़ते हैं, वे 'उपसर्ग' कहलाते हैं। इनके योग से शब्द के अर्थ में विशेषता आ जाती है।

उदाहरण: अव + गुण = अवगुण
अ + ज्ञान = अज्ञान

2. जो शब्दांश मूल शब्द के अंत में लगकर नए शब्द बनाते हैं, वे 'प्रत्यय' कहलाते हैं।

उदाहरण: दूध + वाला = दूधवाला
गुण + ई = गुणी

3. भेद: कृत् प्रत्यय (क्रिया से लगने वाले)

तद्धित प्रत्यय (संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण के अंत में जुड़ने वाले)

विविध:

(क) उपसर्गयुक्त: भरपेट, हमराही, विदेश, अनपढ़, आजन्म, सरपंच

(ख) प्रत्ययययुक्त: बचपन, पछतावा, मिलावट, सुंदरता, मनुष्यता, चिल्लाहट

अध्याय-5 – शब्द भंडार

(पेज 31)

(क) 1. पुष्प, सुमन, कुसुम 2. सूरज, रवि, दिनकर
3. अलौकिक, अद्वितीय, अनूठा 4. गज, करि, हस्ती
5. गजानन, एकदंत, लंबोदर 6. शारदा, भारती, गिरा

(ख) 1. तोय 2. अजर 3. राकेश 4. खनक 5. नीरज

(पेज 33)

(क) 1. (स), 2. (ब)

(ख) 1. अपमान 2. अपकर्ष 3. अस्थिर 4. अक्षम 5. निराकार
6. निर्गुण 7. कुसंगति 8. असुंदर 9. अधम 10. स्थूल

(ग) 1. निकृष्ट 2. सेवक 3. मुक्ति 4. नास्तिक 5. अमंगल 6. अनुपयोग

(पेज 35)

(क) 1. परिवार, वंश, सब 2. प्रेम, गाना, रंग, संगीत का राग
3. मूल, मूर्ख, निर्जीव 4. सूर्य, लाल 5. काला, श्रीकृष्ण

(ख) 1. पराया 2. घर 3. काला 4. छोटा 5. बिजली

(पेज 36)

(क) 1. एक भाषा 2. हृदय 3. बादल
निश्चित समय भीतर कमल

(पेज 38)

(क) 1. परीक्षार्थी 2. पाठक 3. धर्मनिष्ठ 4. भाग्यशाली 5. वक्ता 6. असंभव

(ख) 1. (अ) 2. (स) 3. (ब)

(पेज 40)

(क) 1. वह हथियार, जो हाथ से फेंककर चलाया जाए, जैसे– बाण
जो हथियार निकट से हाथ में पकड़े-पकड़े चलाया जाए, जैसे– तलवार।

2. महत्वपूर्ण पुस्तक
कोई भी किताब

3. वह कार्य, जिसके द्वारा देवी-देवताओं के प्रति भक्ति भाव प्रकट किया जाता है।
देवों की सेवा जो मंत्रो के उच्चार से की जाए।

4. फैसला
ठीक इंसाफ करना

(ख) 1. बजट मे पिछले वर्ष के वास्तविक आया <u>व्यय</u> का विवरण होता है।

2. पानी बहाकर उसका <u>अपव्यय</u> मत करो।

3. स्त्रियों को निर्बल कहने वाले नासमझ होते हैं।

4. बाएँ पैर में दुर्बल कर देने वाली चोट लगने के कारण वह जिंदगी भर फुटबॉल न खेल सका।

5. आशा है, इस बार मैं प्रथम आऊँगा।

6. रवि की डॉक्टर बनने की अभिलाषा पूरी हुई।

7. उसकने अपनी उम्र बहुत कष्ट झेलकर काटी।

8. अब मेरी अवस्था अधिक काम करने की नहीं रही।

अध्याय-6 – संज्ञा

(क) 1. (ब) 2. (स) 3. (द) 4. (ब) 5. (स)

(ख) 1. ✗ 2. ✗ 3. ✗ 4. ✗

(ग) 1. विशेषण 2. क्रिया 3. जातिवाचक संज्ञा 4. सर्वनाम

(घ) 1. भाववाचक 2. द्रव्यवाचक 3. समूहवाचक

4. जातिवाचक 5. व्यक्तिवाचक

(ङ) 1. सर्वस्व 2. प्रभुता 3. योग्यता 4. खेल 5. कड़वाहट

(च) 1. किसी प्राणी, वस्तु, स्थान, गुण, अवस्था या भाव आदि के नाम को 'संज्ञा' कहते हैं।

भेद: व्यक्तिवाचक, जातिवाचक, भाववाचक, समूहवाचक तथा द्रव्यवाचक।

2. पदार्थवाचक– घी, तेल, चीनी

समूहवाचक– झूंड, सेना, कक्षा

विविध:

(क)(i) राम, श्याम: व्यक्तिवाचक मित्रता: भाववाचक

(ii) मीठे: गुणवाचक अंगूर: व्यक्तिवाचक

(iii) सुंदरता: भाववाचक

(iv) वसंत: व्यक्तिवाचक फूल: जातिवाचक

(v) लड़कियाँ: जातिवाचक वृक्ष: जातिवाचक

(ख) संज्ञा– राम, बाज़ार, घर, चिड़ियाँ, घड़ी, घड़ा, दवाई, अस्पताल।

अध्याय-7 – लिंग

पेज 51

(क) 1. (ब), 2. (अ), 3. (द) 4. (स)

(ख) 1. दादी 2. वीरांगना 3. विद्‌वान 4. माता

(ग) 1. पुल्लिंग 2. स्त्रीलिंग 3. पुल्लिंग 4. स्त्रीलिंग 5. स्त्रीलिंग
6. स्त्रीलिंग 7. स्त्रीलिंग 8. पुल्लिंग 9. पुल्लिंग 10. स्त्रीलिंग

(घ) 1. देव 2. सेठ 3. पंडित 4. वीर 5. ससुर
6. विद्‌वान 7. आदमी 8. बंदर 9. धोबी 10. हाथी

(ङ) 1. पत्नी 2. ताई 3. गुड़िया 4. जेठानी 5. भाई
6. ठकुराइन 7. रानी 8. पंडिताइन 9. ऊँटनी 10. लड़की

(च) 1. शब्द के जिस रूप से स्त्री या पुरुष जाति का बोध हो, उसे 'लिंग' कहते हैं।

2. जिस संज्ञा शब्दों से स्त्री जाति का बोध हो, उन्हें 'स्त्रीलिंग' कहते हैं। जैसे– बहिन, माता, चिड़िया आदि।

जिन संज्ञा शब्दों से पुरुष जाति का बोध हो, उन्हें 'पुल्लिंग' कहते हैं। जैसे– भाई, पिता, पर्वत आदि।

3. नित्य पुल्लिंग– मच्छर, कौआ, कीड़ा।

नित्य स्त्रीलिंग– मैना, चील, मकड़ी।

विविध:

(क) मंत्री, प्रधानमंत्री, डॉक्टर।

(ख) 1. नौकरानी ने सारा काम फटाफट कर दिया।

2. कवि ने सुंदर कविता लिखी।

3. हलवाइन स्वादिष्ट पकवान बना रही है।

4. उसका बेटा बहुत समझदार है।

5. हथिनी बीमार होने के कारण बच न सकी।

अध्याय-8 – संज्ञा के विकारी तत्व

(क) 1. (ब), 2. (अ), 3. (द), 4. (ब)

(ख) 1. पुस्तकें 2. कलमें 3. गुरुजन 4. पत्रिकाएँ 5. छात्राएँ

6. पहिए 7. गुड़ियाँ 8. नेतागण 9. ऋतुएँ

(ग) 1. अध्यापक 2. केला 3. श्रमिक 4. सड़क 5. छत
6. आप 7. डिबिया 8. लड़का 9. नदी

(घ) एकवचन– शब्द के जिस रूप से एक प्राणी या वस्तु का बोध होता है, उसे 'एकवचन' कहते हैं। जैसे– पंखा, घड़ा, लड़का आदि।

(ङ) (i) चिड़िया (ii) गाँवों (iii) विद्यार्थीगण (iv) वस्तुएँ (v) बातें

विविध:

1. यदि स्त्रीलिंग शब्द ऊकारांत है, तो ऊ को उ करके उसमें 'एँ' जोड़कर बहुवचन बनाते हैं। जैसे: वधू-वधुएँ

   अकारांत स्त्रीलिंग शब्दों के आगे 'एँ' लगा देने से बहुवचन बन जाते हैं, जैसे: कविता-कविताएँ

2. अकारांत पुल्लिंग शब्दों के अंत में 'आ' के स्थान पर 'ए' कर देने से बहुवचन बन जाते हैं।

   आकारांत स्त्रीलिंग शब्दों के अंतिम अ को एँ कर देने से शब्द बहुवचन में बदल जाते हैं।

   आकारांत स्त्रीलिंग शब्दों के आगे एँ लगा देने से बहुवचन बन जाते हैं।

   यदि स्त्रीलिंग शब्द उकारांत है, वो उसमे एँ जोड़कर बहुवचन बना लेते हैं।

   इकारांत या ईकारांत पुल्लिंग शब्दों के अंत में इ या ई को याँ में बदल देने तथा ई को इ में बदल देने से वे बहुवचन बन जाते हैं।

   यदि स्त्रीलिंग शब्द उकारांत है, तो ऊ को उ करके उसमें एँ जोड़कर बहुवचन बना लेते हैं।

   जिन स्त्रीलिंग शब्दों के अंत में या है, उनके स्थान पर याँ कर देने से वे बहुवचन बन जाते हैं, उनके स्थान पर याँ कर देने से वे बहुवचन बन जाते हैं।

   बृंद, वर्ग, जन, लोग, गण आदि शब्द जोड़कर भी बहुवचन बनाए जाते हैं।

   जिन पुल्लिंग शब्दों के अंत में इया होता है, वहाँ यों जोड़ देते हैं।

   जिन शब्दों के अत में ऊ होता है, उनमे ओं जोड़ने से पहले ऊ का उ कर दिया जाता है।

   जिन पुल्लिंग शब्दों के अंत में आ होता है, उनमें आ के स्थान पर ओं जोड़ते हैं।

अध्याय-9 – कारक

(क) 1. (ब), 2. (स), 3. (अ) 4. (स)

(ख) 1. से 2. में 3. ने, को 4. से 5. का

(ग) 1. ✗ 2. ✓ 3. ✓ 4. ✗ 5. ✓

(घ) 1. संबंध 2. कर्म 3. अपादान 4. संबोधन 5. कर्ता, करण

(ङ) 1. कर्म 2. करण 3. अधिकरण 4. कर्त्ता 5. अधिकरण
6. संबंध 7. करण 8. संप्रदान

(च) 1. संज्ञा या सर्वनाम के जिस रूप से उसका संबंध वाक्य की क्रिया अथवा अन्य शब्दों से ज्ञात हो, वह 'कारक' कहलाता है।

2. वाक्य में जिन संज्ञा एवं सर्वनाम शब्दों पर क्रिया के कार्य का फल पड़ता है, उसका कर्म कारक होता है, जबकि जिसके लिए कुछ किया जाए या जिसको कुछ दिया जाए, वह संप्रदान कारक होता है।

कर्म कारक का चिह्न 'को' होता है, जबकि संप्रदान कारक का विभक्ति चिह्न 'के लिए' होता है।

3. जिस साधन की सहायता से कर्त्ता क्रिया करता है, वह 'करण कारक' में होता है जैसे: रवि ने पेंसिल से पत्र लिखा।

जबकि, संज्ञा या सर्वनाम का वह रूप, जिसमें किसी वस्तु या पदार्थ के अलग होने का बोध होता है, 'अपादान कारक' कहलाता है। जैसे: वृक्ष से पत्ते गिरे।

कारक की तालिका

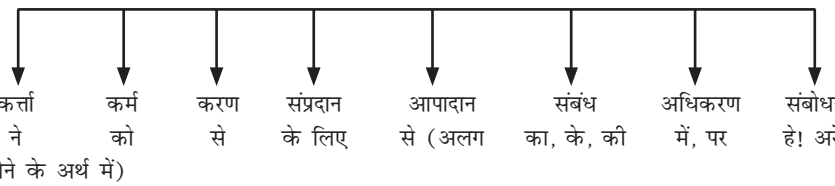

अध्याय-10 – सर्वनाम

(क) 1. (ब) 2. (ब) 3. (ब) 4. (द)

(ख) 1. प्रश्नवाचक 2. अन्य पुरुषवाचक 3. छः
4. अनिश्चयवाचक

(ग) 1. मैं, मेरा, हमारा 2. यह, ये, यह 3. कुछ, किसी, कोई
4. जो, जैसा, सो 5. स्वयं, खुद, आप

(घ) 1. हम विद्यालय जा रहे हैं। 2. उन्होंने आपसे क्या माँगा?

3. हम प्रतिदिन अध्ययन करते हैं। 4. वे चित्र किसने बनाए हैं?

5. तुम कहाँ जा रहे हो?

(ङ) 1. जैसा, वैसा: संबंधवाचक 2. कौन: प्रश्नवाचक

3. कोई: अनिश्चयवाचक 4. तुम: पुरुषवाचक, अपना: निज

5. वे: अन्य पुरुषवाचक 6. मैं: उत्तम पुरुषवाचक

7. वह: अन्य पुरुषवाचक मेरा: अन्य पुरुष

8. स्वयं: निजवाचक

(च) 1. पुरुषवाचक: जो सर्वनाम किसी व्यक्ति के लिए प्रयुक्त होता है, वह पुरुषवाचक सर्वनाम कहलाता है; जैसे: मै, तुम, वह आदि।

2. निश्चयवाचक: वे सर्वनाम जो किसी निश्चित व्यक्ति या वस्तु की ओर संकेत करते हैं, निश्चयवाचक सर्वनाम कहलाते हैं; जैसे: यह, वह, ये, वे आदि।

3. अनिश्चयवाचक: जिस सर्वनाम से किसी व्यक्ति, वस्तु या पदार्थ का निश्चित बोध न हो, उसे अनिश्चयवाचक सर्वनाम कहते हैं; जैसे: कोई, किसी, कुछ आदि।

4. संबंधवाचक: जो सर्वनाम वाक्य में आने वाले दूसरे सर्वनाम से संबंध बताएँ, उन्हें संबंधवाचक सर्वनाम कहते हैं; जैसे: जैसा करोगे, वैसा भरोगे।

5. प्रश्नवाचक: जिन सर्वनाम शब्दों से प्रश्न प्रकट होता है, वे प्रश्नवाचक सर्वनाम कहलाते हैं। जैसे: तुम्हारा, क्या नाम है?

6. निजवाचक: जो सर्वनाम कर्त्ता के साथ अपनापन बताने के लिए आता है, उसे निजवाचक सर्वनाम कहते हैं; जैसे: मैं खुद चली जाऊँगी।

(च) 2. वे सर्वनाम जो किसी निश्चित व्यक्ति या वस्तु की ओर संकेत करते हैं, वे निश्चयवाचक सर्वनाम कहलाते हैं; जैसे: यह, वह आदि।

जबकि–

वे सर्वनाम जिनसे किसी व्यक्ति, वस्तु या पदार्थ का निश्चित बोध न हो, उन्हें अनिश्चयवाचक सर्वनाम कहते हैं; जैसे: कुछ, कोई आदि।

3. पुरुषवाचक आदरसूचक आप का बहुवचन 'आप' या 'आप लोग' होता है, किंतु निजवाचक में 'आप या अपने आप ही दोनों वचनों में होता है; जैसे:

पुरुष 'आप' निजवाचक 'आप'

आप कब आए?आप बुरा तो जग बुरा

आप लोग कब आए? श्रोता आप ही उठेंगे, तो उठेंगे।

विविध:

1. सर्वनाम शब्दों को संज्ञा शब्दों के स्थान पर प्रयोग किया जाता है। संज्ञा तथा संज्ञा वाक्यांशों को आमतौर पर वह, यह, उसका, इसका जैसे सर्वनाम शब्दों द्वारा प्रतिस्थापित कर सकते हैं। ऐसा करने से दोहराव नहीं होता तथा भाषा में स्पष्टता व सौंदर्य बना रहता है।
2. निश्चयवाचक– यह, ये, वह
   अनिश्चयवाचक– कुछ, किसी, कोई

अध्याय-11 – विशेषण

(क) 1. (स) 2. (द) 3. (स) 4. (स)

(ख) 1. ✗ 2. ✓ 3. ✓ 4. ✓

(ग) 1. स्वर्गीय 2. आर्थिक 3. श्रद्धालु 4. तैराकी 5. धनी
6. मौलिक 7. संयमित 8. वन्य 9. अगला 10. पारिवारिक

(घ) 1. जो शब्द संज्ञा या सर्वनाम की विशेषता बताएँ, वे 'विशेषण' कहलाते हैं।

विशेषण जिन शब्दों की विशेषता बताते हैं, वे 'विशेष्य' कहलाते हैं। उदाहरण: मीठा आम

यहाँ 'मीठा' विशेषण है और 'आम' विशेष्य है।

2. गुणवाचक: जिस शब्द से संज्ञा या सर्वनाम के गुण, दोष, रंग, दशा, आकार, आदि का बोध हो, उसे 'गुणवाचक विशेषण' कहते हैं। जैसे: लाल, कठोर, नया।

संख्यावाचक विशेषण: जिन विशेषणों से संज्ञा या सर्वनाम की संख्या प्रकट होती है, उन्हें 'संख्यावाचक विशेषण' कहते हैं। जैसे: दो, कुछ, तीसरा।

परिमाणवाचक: जिन शब्दों से किसी वस्तु के परिमाण या नाप-तोल का पता चलता है, वे 'परिमाणवाचक विशेषण' कहलाते हैं। जैसे: थोड़ा, पाँच लीटर, चार मीटर।

सार्वनामिक संकेतवाचक विशेषण: जो सर्वनाम शब्द, संज्ञा की ओर संकेत करते हैं, उन्हें 'सार्वनामिक विशेषण' कहते हैं। जैसे: वे, इस, उस।

3. परिमाणवाचक: जिन शब्दों से किसी वस्तु के परिमाण या नाप-तोल का पता चलता है, वे 'परिमाणवाचक विशेषण' कहलाते हैं। जैसे: मैंने पाँच लीटर दूध खरीदा।

संख्यावाचक– यदि विशेष्य गिनी जा सकने वाली वस्तु है, तो उसके साथ प्रयुक्त

विशेषण 'संख्यावाचक' माना जाता है। उदाहरण: यहाँ से तीसरा घर मेरा है।

4. सर्वनाम के तुरंत बाद संज्ञा आने पर वह सर्वनाम न रहकर सार्वनामिक विशेषण बन जाता है। उदाहरण:

सर्वनाम	सार्वनामिक विशेषण
1. वह गई।	वह लड़की गई।
2. उसे कुछ चाहिए।	उसे कुछ रुपए चाहिएँ।

विविध:

(क) मेरा परिवार एक सुखी परिवार है। इसमे पाँच सदस्य है। मेरे पिताजी बहुत परिश्रमी हैं। माँ अत्यंत सुशील एवं सुघड़ हैं। मेरे दो भाई हैं। वे बहुत मददगार हैं। मेरा परिवार बहुत प्यारा है।

अध्याय-12 – क्रिया

(क) 1. (ब) 2. (द) 3. (ब) 4. (द)

(ख) सकर्मक: 1, 3, 4

अकर्मक: 2, 5

(ग) सकर्मक: 1. करेंगे (सकर्मक) 2. कर लिया है। (सकर्मक)
3. हिन हिनाने लगा (अकर्मक) 4. करवाती है। (अकर्मक)
5. सो रहा है। (अकर्मक)

(घ) 1. जिस शब्द से किसी काम का करना या होना पाया जाए, उसे 'क्रिया' कहते हैं। उदाहरण: लिख, हँस, पढ़, गा आदि।

2. सकर्मक– जिन क्रियाओं के साथ कर्म होता है, वे 'सकर्मक क्रिया' होती हैं। उदाहरण: लिखना, पढ़ना, बेचना आदि।

अकर्मक– जिस क्रिया को कर्म की आवश्यकता नहीं होती है, वह 'अकर्मक क्रिया' होती है। उदाहरण: बच्चा सोता है।

विविध:

1. कई सकर्मक क्रिया वाले वाक्य में दो कर्म होते हैं। वह क्रिया 'द्विकर्मक' होती है; जैसे– मैं रवि को किताब दूँगा। (दो कर्म: रवि, किताब)
2. पूर्वकालिक क्रिया:
सीमा पढ़कर सो गई। (पढ़कर)
वह बैठकर पूजा कर रही है। (बैठकर)

अध्याय-13 – काल

(क) 1. (स) 2. (ब) 3. (स)

(ख) 1. भूतकाल 2. पाँच 3. समय 4. तीन

(ग) 1. वह आ रहा था। 2. वर्षा होगी।

3. वह मुंबई जा रहा है। 4. राहुल प्रतिदिन विद्यालय जाएगा।

5. नेहा गाना गा रही है।

(घ) 1. क्रिया के जिस रूप से कर्म करने, होने या न होने के समय का बोध होता है, इस समय को 'क्रिया का काल' कहते हैं।
भेद: भूतकाल, वर्तमान काल, भविष्यत् काल

2. क्रिया के जिस रूप से यह ज्ञात हो, कि क्रिया का होना या करना अभी चल रहा है, उसे 'वर्तमान काल' की क्रिया कहते हैं। जैसे: सीमा पढ़ रही है।

विविध:

(i) भविष्यत् काल (ii) भूतकाल (iii) वर्तमान काल

(iv) भूतकाल (iv) वर्तमान काल

अध्याय-14 – वाच्य

(क) 1. (अ) 2. (ब)

(ख) 1. भाववाच्य 2. कर्तृवाच्य 3. कर्तृवाच्य 4. कर्म 5. कर्तृ

(ग) 1. लड़कियों से खिलखिलाकर हँसा जाता है।

2. अनु द्वारा चुटकले सुनाए गए।

3. श्वेता द्वारा परीक्षा दी जा रही है।

4. छवि गीत गाती है।

5. रोहन गीत गाता है।

(घ) 1. क्रिया के जिस रूप से यह पता चले, कि क्रिया का मुख्य विषय कर्त्ता है, कर्म है अथवा भाव, उसे 'वाच्य' कहते हैं।

भेद: 1. कर्तृवाच्य 2. कर्मवाच्य 3. भाववाच्य

2. क्रिया के जिस रूप में कर्म की प्रधानता होती है तथा वाक्य में क्रिया कर्म के लिए लिंग, वचन आदि के अनुसार ही प्रयोग की जाती है, उसे 'कर्मवाच्य' कहते हैं।

जहाँ वाक्य में भाव की प्रधानता होती है और क्रिया के लिंग-वचन भाव के अनुसार होते हैं, वहाँ क्रिया भाववाच्य कहलाती है।

विविध:

कर्तृवाच्य में कर्त्ता क्रिया के अनुसार होती है।

अध्याय-15 – अविकारी शब्द

(क) 1. (स) 2. (अ)

(ख) 1. और 2. क्योंकि 3. या 4. कि 5. इसलिए

(ग) 1. यहाँ 2. अंदर 3. प्रतिदिन 4. अचानक 5. अधिक

(घ) 3, 4, 5

(ङ) 1. जिन शब्दों में लिंग, वचन, पुरुष, कारक या काल आदि के कारण कोई विकार (परिवर्तन) उत्पन्न नहीं होता है, उन्हें अव्यय/अविकारी शब्द कहते हैं।

अ + व्यय = अव्यय (जिसका व्यय न किया जा सके)

अव्यय के भेद– क्रियाविशेषण, संबंधबोधक, समुच्चयबोधक, विस्मयादिबोधक।

2. संबंधबोधक से तात्पर्य है– संबंध का बोध कराने वाला जो अविकारी शब्द संज्ञा या सर्वनाम शब्दों से जुड़कर, उनका संबंध वाक्य के दूसरे शब्दों से बताते हैं, उन्हें 'संबंधबोधक अव्यय' कहते हैं।

3. वाक्य में प्रयुक्त जिन शब्दों के द्वारा हर्ष, क्रोध, घृणा, शोक, आश्चर्य आदि के भाव प्रकट हो, उन्हें 'विस्मयादि बोधक अव्यय' कहते हैं।

उदाहरण: हाय! यह कैसे हो गया?

वाह! हम जीत गए।

विविध:

यह प्रश्न छात्र स्वयं करेंगे।

अध्याय-16 – वाक्य विचार

(क) 1. (ब) 2. (स) 3. (अ) 4. (ब)

(ख) 1. मेरी माँ अध्यापिका हैं।

2. वाह! क्या जगह है।

3. यदि तुम मेहनत करोगे, तो प्रथम आओगे।

4. रवि पढ़ रहा है।

5. जो बच्चे आज्ञाकारी होते हैं, वे सदा सफल होते हैं।

6. शायद वह चला गया होगा।

7. तुम क्यों रो रहे थे?

8. मैं घर नहीं जाऊँगा।

(ग) 1. सूर्य– उद्देश्य पूर्व दिशा से निकलता है।– विधेय

2. पुस्तक– उद्देश्य मेज़ पर रखी है।– विधेय

3. महेश– उद्देश्य खाना खा रहा है।– विधेय

4. ईमानदार व्यक्ति– उद्देश्य सम्मान पाते हैं।– विधेय

(घ) 1. वह पढ़ नहीं रहा है।

2. वाह! कितना विशाल भवन है।

3. इस लड़के ने प्रथम पुरस्कार प्राप्त किया।

4. क्या आप जा रहे हैं?

5. अवगुणी व्यक्ति को कोई आश्रय नहीं देगा।

6. वह धनी है, किंतु बेइमान है।

(ङ) 1. सार्थक शब्दों का ऐसा समूह, जो व्यवस्थित हो और कोई अर्थ देता हो, 'वाक्य' कहलाता है।

2. जहाँ दो अथवा दो से अधिक सरल वाक्य किसी समानाधिकरण समुच्चयबोधक से जोड़े गए हों, उदाहरण: मैं वहाँ गई, परंतु जल्दी ही वापिस आ गई।

3. जिस वाक्य में एक प्रधान उपवाक्य तथा एक या अधिक आश्रित उपवाक्य होते हैं, उसे 'मिश्र वाक्य' कहते हैं।

विविध:

1. वाक्य में जिसके विषय में कुछ बताया जाता है, उसे 'उद्देश्य' कहा जाता है, जबकि वाक्य में उद्देश्य के विषय में जो कुछ कहा जाता है, उसे 'विधेय' कहते हैं।

2. अर्थ की दृष्टि से वाक्य में भेद–

(i)	सकारात्मक वाक्य	(ii)	नकारात्मक वाक्य
(iii)	प्रश्नवाचक वाक्य	(iv)	विस्मयादिबोधक वाक्य
(v)	आज्ञावाचक वाक्य	(vi)	संदेहवाचक वाक्य
(vii)	इच्छावाचक वाक्य	(viii)	संकेतवाचक वाक्य

3. जिस वाक्य में एक ही क्रिया होती है, उसे 'सरल' या 'साधारण' वाक्य कहते

हैं। जैसे: राहुल पढ़ रहा है।

4. (i) माँ ने समझाया था, पर वह नहीं माना (संयुक्त)।
   (ii) वह बालक अस्वस्थ था, इसलिए वह घर चला गया।
   (iii) मैं दूध पीऊँगी और बाज़ार जाऊँगी।

4. (i) ज्यों ही हरी बत्ती हुई, त्यों ही गाड़ियाँ चल पड़ीं।
   (ii) जब मैं मुंबई जाऊँगा, तब रोहन दिल्ली जाएगा।
   (iii) वह इतना ईमानदार है, कि वह किसी से नहीं डरता।

अध्याय-17 – विराम चिह्नों का प्रयोग

(क) 1. (स) 2. (स) 3. (स) 4. (ब)

(ख) 1. ✗ 2. ✓ 3. ✗ 4. ✓ 5. ✗

(ग) 1. वह परिश्रमी, ईमानदार और स्वस्थ है।

2. मेले में लोगों की भीड़ थी।

3. डॉ. एस. एस. राघव का घर समीप ही है।

4. समस्त बालक-बालिका, स्त्री-पुरुष एवं बुजुर्ग उपस्थित थे।

5. लोकमान्य तिलक ने कहा था- ''स्वतंत्रता मेरा जन्मसिद्ध अधिकार है।''

6. वह मितभाषी (कम बोलने वाला) है।

7. वाह! तुमने बहुत अच्छा भाषण दिया।

8. तुम्हारे पास कौन-कौन आया था?

9. सेनापति महाराज! आपसे कोई मिलना चाहता है।

10. रामधारी सिंह 'दिनकर' एक महान कवि थे।

(घ) 1. सामान्य कथन वाले सभी प्रकार के वाक्यों–सरल, संयुक्त और मिश्र वाक्यों के अंत में 'पूर्ण विराम' का चिह्न लगाया जाता है।

2. वक्ता अथवा लेखक की बात को ज्यों-का-त्यों बताने के लिए, दोहरे उद्धरण चिह्न का प्रयोग किया जाता है।

किसी पुस्तक, शीर्षक तथा उपनाम के लिए इकहरे उद्धरण चिह्न का प्रयोग किया जाता है।

3. 'विवरण चिह्न' का प्रयोग वाक्यांश में जानकारी, सूचना या निर्देश आदि को दर्शाने या विवरण देने के लिए किया जाता है, जैसे:
कृपया निम्नलिखित नियमों का पालन करें :–

4. (i) अरे! जल्दी चलो।

(ii) वाह! क्या दृश्य है।

5. (i) रामः क्या तुम भी चलोगे?

(ii) निम्न उदाहरण प्रस्तुत हैं:

विविधः

1. पूर्ण विराम (।)
2. (i) " " ' '
   (ii) (–)
   (iii) (।)
   (iv) (?)
   (v) (,)
   (vi) (०)

अध्याय-18 – समास

(क) 1. (ब) 2. (अ) 3. (ब) 4. (ब)

(ख) 1. गंगाजल 2. नीलांबर 3. चक्रधारी 4. शताब्दी 5. हस्तलिखित
6. देशभक्ति 7. यथाशक्ति 8. लंबोदर

(ग)

1. शत अब्दों का समूह	द्विगु
2. माता और पिता	द्वंद्व
3. चार भुजाओं वाला अर्थात विष्णु	बहुब्रीहि
4. घोड़े पर सवार	तत्पुरुष
5. एक-एक	अव्ययी भाव
6. एक दाँत वाला, अर्थात् गणेश	बहुब्रीहि
7. कमलरूपी नयन	कर्मधारय
8. रात और दिन	द्वंद्व

(घ) 1. दो या दो से अधिक परस्पर संबंधित शब्दों के संयोग से, जो एक स्वतंत्र शब्द बनता है, या परस्पर संबंध रखने वाले दो या दो से अधिक शब्दों के मेल को 'समास' कहते हैं। उदाहरणः यथासंभव– जहाँ तक संभव हो।

2. सामासिक शब्दों के बीच के संबंधों को स्पष्ट करना 'समास-विग्रह' कहलाता है। उदाहरणः रात-दिन– रात और दिन।

3. जब दो या दो से अधिक शब्द मिलकर एक नया शब्द बनाते हैं, तो वह 'समस्त पद' कहलाता है। उदाहरणः गंगाजल

'गंगाजल' समस्त पद है, यहाँ 'गंगा' पूर्वपद और 'जल' उत्तर पद है।

4. समास के भेद:

(i) अव्ययथी समास (ii) तत्पुरुष समास (iii) द्वंद्व समास

(iv) बहुब्रीहि समास (v) कर्मधारय समास (vi) द्विगु समास

5. तत्पुरुष समास– कर्ता और संबोधन कारक को छोड़कर अन्य छह कारकों के आधार पर इस समास के 6 भेद हैं–

(i) कर्म तत्पुरुष (ii) करण तत्पुरुष (iii) संप्रदान तत्पुरुष

(iv) अपादान तत्पुरुष (v) संबंध तत्पुरुष (vi) अधिकरण तत्पुरुष

इसमें दूसरा पद प्रधान हाता है। समास होने पर बीच की विभक्ति का लोप हो जाता है। उदाहरण: घुड़सवार-घोड़े पर सवार (अधिकरण तत्पुरुष)

अव्ययीभाव समास– इसका पूर्व पद अव्यय होता है और प्रधान होता है। इससे बना समस्त पद भी अव्यय होता है। उदाहरण: जहाँ तक संभव हो।

विविध:

1. बहुब्रीहि समास– इसमें न पहला पद प्रधान होता है, न दूसरा। दोनों पद मिलकर किसी तीसरे पद की ओर संकेत करते हैं। उदाहरण: एकदंत– एक दाँत वाला अर्थात् गणेश।

   कर्मधारय समास– इसमें पहला पद विशेषण या उपमान होता है और दूसरा पद (विशेष्य या उपमेय) प्रधान होता है। उदाहरण: कमलनयन (कमल के समान नयन)

2. (i) धर्म-अधर्म : द्वंद्व
   (ii) परलोकगमन : कर्मतत्पुरुष
   (iii) त्रिफला : द्विगु
   (iv) तुलसीकृत : करण तत्पुरुष
   (v) शरणागत : अधिकरण तत्पुरुष
   (vi) हस्तलिखित : तत्पुरुष
   (vii) अष्टाध्यायी : द्विगु
   (viii) यथाशक्ति : अव्ययीभाव
   (ix) लंबोदर : बहुब्रीहि
   (x) चरणकमल : कर्मधारय

अध्याय-19 – शब्द रचना

(क) 1. (अ) 2. (ब) 3. (ब) 4. (द)

(ख) 1. संधि 2. आ 3. महेश 4. यण् 5. विसर्ग

(ग) 1. इत्यादि 2. पावक 3. हिमालय 4. राजेंद्र 5. यशोदा
6. तथैव 7. मुनीश 8. नदीश 9. मनोहर 10. सच्चरित्र

(घ) 1. समय + अनुकूल 2. महा + इंद्र
3. नै + अक 4. चे + अन
5. प्रति + उत्तर 6. अभि + इष्ट
7. एक + ऐक 8. पो + अन
9. उपरि + उक्त 10. जगत् + ईश

(ङ) 1. दो वर्णों के मिलन से होने वाले परिवर्तन/विकार को 'संधि' कहते हैं; भेद: स्वर, व्यंजन, विसर्ग।

2. दीर्घ संधि– जब किसी ह्रस्व या दीर्घ स्वर के बाद उसी स्वर का ह्रस्व या दीर्घ रूप आता है, तो दोनों वर्ण मिलकर दीर्घ हो जाते हैं। यह 'दीर्घ संधि' कहलाती है। उदाहरण: इ + ई = ई
हरि + ईश = हरीश

गुण संधि– जब 'अ', 'आ' के बाद 'इ' 'ई' वर्ण मिलते हैं, तो 'ए' होता है। 'अ', 'आ' के बाद 'उ', 'ऊ' वर्ण हों, तो दोनों मिलकर 'ओ' हो जाते हैं, 'अ', 'आ' के बाद 'ऋ' होने पर दोनों का मिलन 'अर्' हो जाता है। दो वर्णों का यह मेल 'गुण संधि' कहलाता है।
उदारण: आ + इ = ए
महा + इंद्र = महेंद्र

3. वृद्धि संधि– जब 'अ' या 'आ' के बाद 'ए' या 'ऐ' हों, तो दोनों वर्ण मिलकर 'ऐ' हो जाते हैं तथा 'अ' या 'आ' के बाद 'ओ' या 'औ' होने पर 'औ' हो जाते हैं। वर्णों के इस मिलन को 'वृद्धि संधि' कहा जाता है,
जैसे: एक + ऐक = एकैक (अ + ए = ऐ)
महा + औषध = महौषध (आ + औ = औ)

यण् संधि– इ या ई के बाद इससे भिन्न कोई स्वर हो, तो इ या ई के स्थान पर य् हो जाता है, उ या ऊ के पश्चात् इससे भिन्न कोई स्वर हो, तो उ या ऊ का व् हो जाता है और ऋ के पश्चात् ऋ के अतिरिक्त कोई अन्य स्वर हो, तो ऋ का र् हो जाता है।
जैसे: अति + अधिक = अत्यधिक
इ या ई + कोई अन्य स्वर = य्

4. ए, ऐ, ओ या औ के बाद यदि कोई विजातीय स्वर आ जाए, तो ए का अय्,

ऐ का अव् और औ का आव् हो जाता है। इसे 'अयादि संधि' कहते हैं।

उदाहरण: भो + अन = भवन (ओ + अ = अव्) गै + इक = गायक (ऐ + अ = आय्)

5. विसर्ग संधि–

नि: + चय = निश्चय, यश: + द = यशोदा, प्रात: + काल = प्रात:काल

विविध:

1. गुण संधि–

नर + इंद्र = नरेंद्र (अ + इ = ए)

रमा + ईश = रमेश (आ + ई = ए)

सप्त + ऋषि= सप्तर्षि (अ + ऋ = अर्)

2. (क) गै + इक (ख) सु + आगत (ग) महा + औषध

(घ) जगत् + नाथ (ङ) मुनि + ईश

अध्याय-20 – मुहावरे एवं लोकोक्तियाँ

(क) 1. दृढ़ निश्चय करना 2. सावधान होना 3. दोष लगाना

4. अपना काम निकालना 5. बहुत आदर करना 6. रूठना

(ख) 1. एक वस्तु के अनेक चाहने वाले 2. एक काम से अनेक लाभ

3. सही न्याय होना 4. आवश्यकता से बहुत कम

5. दुर्बल व्यक्ति अधिक दिखावा करता है

(ग) 1. एक काम से दुगुना लाभ 2. बिल्कुल अनपढ़

3. काम शुरू करते ही बाधा 4. सत्य बोलने वाले को कोई भय नहीं

5. जिसमें ज्ञान कम होता है, वह दिखावा अधिक करता है।

(घ) 1. रोहन के कम अंक देख, पिताजी <u>आपे से बाहर हो गए</u>।

2. उसके घर सही-सलामत पहुँचने की खबर पाकर मेरा <u>कलेजा ठंडा हो गया</u>।

3. रीमा ने अपने दफ़्तर में मेरी नौकरी क्या लगवा दी, वह तो जब देखो मुझे <u>अपनी अँगुलियों पर नचाती रहती है</u>।

(ङ) 1. मुहावरा वाक्य के बीच में प्रयोग किया जाता है, अत: वाक्य का अंग बन जाता है। लोकोक्ति वाक्य का अंग नहीं होती, उसका प्रयोग स्वतंत्र रूप से वाक्य के अंत में, उदाहरण के तौर पर किया जाता है।

2. मुहावरा वाक्य खंड होता है, जबकि लोकोक्ति पूर्ण वाक्य होती है।

3. पूर्ण इकाई होने के कारण लोकोक्ति के स्वरूप में परिवर्तन नहीं किया जा सकता, जबकि मुहावरे के शब्द वाक्य के अनुसार परिवर्तनीय होते हैं।

विविध:

1. लोकोक्तियाँ स्वत: पूर्ण वाक्य होती हैं। पूर्ण इकाई होने के कारण वाक्य में इनका प्रयोग ज्यों-का-त्यों किया जाता है।
2. यह प्रश्न विद्यार्थी स्वयं करेंगे।

अध्याय-22 – अपठित गद्यांश/पद्यांश

1. 1. (द) 2. (ब) 3. (अ) 4. (स) 5. (ब)
2. 1. (ब) 2. (अ) 3. (स) 4. (ब) 5. (द)
3. 1. 'नागरिकों के कर्त्तव्य'

   2. प्रत्येक नागरिक का सबसे बड़ा कर्त्तव्य यह होना चाहिए, कि वह अपने देश की सुरक्षा एवं शांति के लिए प्रयत्नशील रहे।

   3. यदि देश पर कोई विदेशी आक्रमण हो या देश में कोई उपद्रव हो तो उस समय नागरिकों को सरकार की नि: संकोच सहायता करनी चाहिए।

   4. प्रजातंत्र में सरकार जनता की अपनी चुनी हुई होती है।

   5. सरकार का काम धन से चलता है।

4. 1. लोग लाइट हाउस की रोशनी में किनारे की सड़क और चबूतरे पर बैठे थे।

   2. सागर-संगीत अर्थात् सागर के तट की मधुर ध्वनियाँ। निर्जन तट पर लहरों की दहाड़ें, उनका गर्जन।

   3. सागरीय जल के ऊपर उठाकर आगे बढ़ने को 'ज्वार' और नीचे गिरकर पीछे लौटने को 'भाटा' कहते हैं।

   4. लेखक ने नदियों को लहरों से अच्छा बताया है। बाढ़ आती है, तो यह नदियाँ अपना रूप बदल लेती हैं, मार्ग बदल लेती हैं।

   5. समुद्र को 'बेचारा सागर' इसलिए कहा गया है, क्योंकि वह जहाँ है, वहीं स्थिर है। यह इसकी अपनी नियति है। उसी में फँसा रहेगा।

काव्यांश 3

1. अहंकार करने वाले लोगों को ढेर सारा प्यार छोड़ना पड़ता है।
2. इसका आशय है, कि जो लोग जीवन में मुश्किलों के डर से आगे नहीं बढ़ते, नई चुनौतियों को स्वीकार नहीं करते, वे ज़िंदगी में एक अच्छा मुकाम हासिल नहीं कर पाते।
3. जीवन की सफलता के लिए, कुछ अच्छा कर गुज़रने के लिए विश्वास जरूरी है।
4. अपनी शंकाओं को छोड़कर तथा खुद पर विश्वास रखकर हम निश्चिंत और चैन भरा जीवन जी सकते हैं।
5. कविता का मुख्य उद्देश्य है– हमें जीवन की सफलता का मूल मंत्र समझाना।

काव्यांश-4

1. कवि के अनुसार मेरे देश ने सब देशों को ज्ञान का उपदेश दिया है?
2. 'जीयो और जीने दो' सभी धर्मों का यह संदेश है।
3. सबके साथ प्रेम भाव रखकर, किसी का दिल न दुखाकर इस धरती को स्वर्ग बनाया जा सकता है।
4. 'सभी सुखी हों, सब निरोग हों'– यही हमारे देश की विशेषता है।
5. (क) अज्ञान (ख) नरक (ग) स्वस्थ

काव्यांश-5

1. वसंत के आगमन से संसार में अनंत शोभा देखने को मिलती है।
2. वसंत आने पर सरसों फूल उठती है और आम के पेड़ों में बौरें झूल उठती हैं।
3. वसंत में घर आँगन अत्यंत सुंदर दिखाई देता है।
4. वसंत ऋतु में सुगंधित पवन चलती है।
5. इस पंक्ति का यह आशय है कि वसंत के आगमन पर कोयल मधुर स्वर में गाती है और सब सुखी व प्रसन्न नज़र आते हैं।

अध्याय-23 – कहानी लेखन

1. सच्ची मित्रता

मधु और सीमा दोनों एक विद्यालय में पढ़ती थीं। बहुत पक्की दोस्ती थी उन दोनों के बीच। एक दिन दोनों को ध्यान ही न रहा कि कब रात हो गई। अब उन दोनों को डर सताने लगा कि कहीं कोई जंगली जानवर न आ जाए। इस खतरे से बचने के लिए वे जंगल से बाहर निलकने के लिए दौड़ने लगीं। परंतु दौड़ते-दौड़ते मधु की चप्पल टूट गई और खून बहने लगा। उसे चलने में काफी परेशानी होने लगी। तभी दूर से किसी जानवर

के चिंघाड़ने की आवाज़ आई। उसे सुनते ही सीमा तेज़ी से भाग गई। मधु तो चलने में भी असमर्थ हो रही थी, परंतु उसने हिम्मत न हारी और धीरे-धीरे चलते हुए जंगल से सुरक्षित बाहर आ गई। अगले दिन वे दोनों जब विद्यालय में मिली, तो सीमा ने कहा–''मैंने तो सबक सीख लिया, कि अब कभी जंगल की ओर नहीं जाऊँगी'' तब मधु ने जवाब दिया, ''हाँ! मैंने भी सबक सीख लिया था कि सच्चा मित्र वही जो समय पर काम आए।''

शिक्षा– सच्चा मित्र वही होता है, जो मुसीबत के वक्त आपका साथ न छोड़े।

2. लालच बुरी बला है

एक बार की बात है। एक गाँव में एक कुत्ता था। वह बहुत लालची था। वह खाने की तलाश में जगह-जगह भटकता रहा। पर उसे कहीं खाना न मिला। अंत में एक होटल के बाहर उसे माँस का एक टुकड़ा मिला। वह उसे अकेले में बैठकर खाना चाहता था इसलिए वह उसे लेकर भाग गया। सुनसान जगह की तलाश करते-करते वह एक नदी के किनारे पहुँच गया। अचानक उसने नदी में अपनी परछाई देखी। उसे लगा, पानी में कोई और कुत्ता है, जिसके मुँह में माँस का टुकड़ा है। उसे लालच आ गया। उसने सोचा– 'क्यों न इसका टुकड़ा छीन लिया जाए!'' वह उस पर ज़ोर से भौंका। ऐसा करने से उसका अपना माँस का टुकड़ा नदी में गिर गया। उसे अपने किए पर बहुत पछतावा हुआ।

शिक्षा– हमें कभी लालच नहीं करना चाहिए।

3. संतोष– सबसे बड़ा धन

एक गाँव में दो मित्र रहते थे। एक राम और दूसरा श्याम। राम हमेशा खुश रहता था, जबकि श्याम परेशान। राम अपने मित्र श्याम को बहुत समझाता था कि ईश्वर ने जितना दिया है, उसमें संतोष रखना चाहिए। पर उसे हमेशा ही खुद को और भगवान को कोसते रहने की जैसे आदत सी हो गई थी। एक दिन की बात है, श्याम बाज़ार जा रहा था। रास्ते में उसे एक अपाहिज दिखा। श्याम ने उसकी मदद करने की सोची। उसने सड़क पार करने में उसकी सहायता की। श्याम ने सोचा बेचारा अंधा है, घर तक भी कैसे पहुँचेगा। इसलिए उसने उस अपाहिज को कहा कि ''तुम्हारे पैर भी ठीक नहीं, नज़र भी ठीक से नहीं आता। चलो मैं तुम्हें तुम्हारे घर तक छोड़ देता हूँ।'' भिखारी ने हँसकर कहा– ''कैसा घर साहब! यह सड़क की पटरी ही हमारा घर है।'' सुनकर श्याम को जैसे धक्का-सा लगा। उसे आज यह एहसास हो रहा था, कि उसके पास भगवान का दिया कितना कुछ है। रहने के लिए घर है, जिसमें सारी सुख-सुविधाएँ हैं, हाथ-पैर, आँखें-नाक सब कुछ

सही-सलामत है। आज जिंदगी में पहली बार उसे यह समझ आया कि जो भी उस ईश्वर का दिया है, उसमें संतोष करना चाहिए।

शिक्षा– जितना ईश्वर ने दिया है, उसमें सदा संतुष्ट रहना चाहिए।

4. परिश्रमी राजू

चन्दरपुर गाँव में एक सीधा-सा, मासूम-सा बच्चा रहता था– 'राजू'। उसे सब मंदबुद्धि कहकर चिढ़ाते थे। एक दिन वह कुएँ के पास बैठा था। तभी उसकी नज़र पत्थर पर पड़े निशान पर गई। उसने सोचा, जब इस कठोर पत्थर पर रस्सी के आने-जाने से निशान पड़ सकता है तो परिश्रम व अभ्यास करके मैं विद्या क्यों नहीं प्राप्त कर सकता? उसने उसी समय यह ठान लिया, कि अब मैं किसी के उपहास का विषय नहीं बनूँगा। उस दिन से उसने कड़ी मेहनत करनी शुरू कर दी और प्रथम श्रेणी में परीक्षा पास की। उस पर हँसने वाले आज उसकी प्रशंसा करते नहीं थक रहे थे।

शिक्षा– परिश्रम ही जीवन का आधार है।

अध्याय-24 – संवाद-लेखन

1. डॉक्टर – नमस्कार! क्या परेशानी है बताइए?
   रोगी – डॉक्टर साहब, कल रात से काफ़ी तेज बुखार है। शरीर में भी काफी दर्द है।
   डॉक्टर – ठंड तो नहीं लग रही? गला ठीक है?
   रोगी – नहीं डॉक्टर साहब ठंड नहीं लग रही। शरीर में दर्द काफ़ी है।,
   डॉक्टर (पर्ची लिखकर देते हुए) – ये दवाइयाँ ठीक समय पर लेना। दिन में तीन बार चार-चार गोली। रात को सोते समय दूध ज़रूर लेना।
   रोगी – जी ठीक है। कुछ परहेज़ भी करना है?
   डॉक्टर – बाहर का खाना नहीं खाना। ठंडा और खट्टा भी नहीं। हल्का खाना लो।
   रोगी – डॉक्टर साहब, मैं ध्यान रखूँगा इन बातों का। आपकी फीस?
   डॉक्टर – सौ रुपए।
   रोगी – यह लीजिए, धन्यवाद
2. ग्राहक – भैया, टमाटर क्या भाव दिए?
   सब्ज़ीवाला – तीस रुपए किलो।
   ग्राहक – ठीक-ठीक लगाओ भैया। चार किलो ले लेंगे।

सब्ज़ीवाला – अच्छा आप पच्चीस दे देना। और क्या लेना है?
ग्राहक – प्याज़ कैसे दिए भैया?
सब्ज़ीवाला – प्याज़ पच्चीस रुपए।
ग्राहक – ठीक है, प्याज़ भी चार किलो तोल देना।
सब्ज़ीवाला – दो सौ बीस रुपए हो गए आपके।
ग्राहक – थोड़ी हरी मिर्च और धनिया डाल देना भैया।
सब्ज़ीवाला – ठीक है, लीजिए।

3. सुरेश – नमस्ते मित्र, कैसे हो? इतने परेशान से क्यों लग रहे हो।
रमेश – अरे क्या बताऊँ मित्र! आजकल हर जगह भ्रष्टाचार ने अपने फन फैलाए हुए हैं।
सुरेश – अरे हुआ क्या? अब बताओगे भी।
रमेश – तुम तो जानते ही हो, मेरा बेटा रवि कितना होशियार है। इतनी मेहनत करके पी.एच.डी. की डिग्री भी हासिल की उसने, पर कहीं अच्छी नौकरी नहीं मिल पाई।
सुरेश – हाँ रवि तो शुरू से ही बड़ा मेहनती है, पर नौकरी की समस्या क्यों आ रही है।
रमेश – इसलिए क्योंकि सब जगह सिफ़ारिश चलती है।
सुरेश – यह तो तुम सही कह रहे हो। यही तो भ्रष्टाचार है।
रमेश – सही बात है। भ्रष्टाचार हमारे समाज की एक विकट समस्या है।

4. अनिल – हरीश कहीं नौकरी मिली क्या तुम्हें?
हरीश – कहाँ मिली दोस्त! धक्के खा-खाकर चप्पलें घिस गईं मेरी तो।
अनिल – यहाँ मेरे घर भी तो यही समस्या चल रही है। मेरे बेटे की अच्छी खासी शिक्षा लेने के बाद भी कहाँ नौकरी लग रही है।
हरीश – बहुत ही गंभीर समस्या है यह बेरोजगारी भी। पता नहीं कब यह समस्या हल होगी।
अनिल – सरकारी नौकरी की परीक्षाओं में घोटाला, सीटों में घोटाला। क्या पता कब और कैसे ठीक होगा यह सब।
हरीश – मेहनत करते रहो, कभी तो फल मिलेगा अपनी मेहनत का।

डायरी-लेखन

1. स्वयं करेंगे।
2. मैं आज विद्यालय जा रही थी। रास्ते में मुझे एक अपाहिज मिला। उसके पैरों में काफी दिक्कत थी। वह बैसाखी की मदद से चल रहा था। मैंने उससे पूछा– ''क्या मै तुम्हें सड़क पार करा दूँ? खाने के लिए पैसे लोगे?'' उसने कहा– ''साहब! हम अपनी मेहनत का खाते हैं। यहाँ समाने ही होटल में काम करता

हूँ मैं, पूरे दिन मेहनत करता हूँ और अपने परिवार को पालता हूँ।'' उससे बात करके मुझे अपने जीवन के लिए आज एक प्रेरणा मिली, कि ईश्वर ने जो दिया है, उसमें खुश व संतुष्ट रहेंगे, तो सदा सुखी रहेंगे।

अध्याय-25 – अनुच्छेद-लेखन

संकेत:

1. प्रात: काल का अर्थ .....पक्षियों की चहचहाहट .....
   सूर्योदय का दृश्य ..... ठंडी तेज़ हवा .....
   सैर करते लोग .....
2. आज की आवश्यकता ..... ऑनलाइन कक्षाएँ .....
   ज़रूरी जानकारियाँ प्राप्त करना सरल ..... घर बैठे
   अनेक सुविधाएँ ..... कुद हानियाँ
3. एक सुबह ..... विद्यालय के रास्ते में ..... तेज़ गड़गड़ाहट
   मूसलाधार वर्षा ..... बस्ता भीग जाना ..... विद्यालय देर से पहुँचना ..... अध्यापिका की डाँट
4. मनोरंजन कितना आवश्यक ..... टी.वी. रेडियो कंप्यूटर आदि की सुविधाएँ..... समय बिताने के माध्यम ..... आँखों को नुकसान.....
5. शिक्षा का महत्त्व ..... सर्वशिक्षा का अर्थ ..... सर्व शिक्षा कितनी ज़रूरी ..... शिक्षा अभियान ..... अशिक्षित होने के नुकसान.....
6. स्वतंत्रता का अर्थ ..... स्वतंत्रता दिवस कब मनाया जाता है .... क्यों मनाया जाता है ..... स्वतंत्रता कैसे प्राप्त हुई ..... देश-भक्तों का उदाहरण ..... स्वतंत्रता की रक्षा
7. परिश्रम का पर्याय ..... जीवन में परिश्रम का महत्त्व ..... चींटी का उदाहरण ..... विद्यार्थी के लिए परिश्रम कितना जरूरी .....
8. प्रदूषण का अर्थ ..... कारण ..... प्रकार ..... आज बढ़ते प्रदूषण के कारण ..... हमारी जिम्मेदारी
9. भारत देश की महानता ..... सपनों का वास्तविक

अध्याय-26 – पत्र लेखन

1. सेवा में,
प्रधानाचार्य जी,
क.ख.ग. विद्यालय,
नई दिल्ली।
तिथि:
विषय: आर्थिक सहायता हेतु
महोदय,
सविनय निवेदन यह है, कि मैं आपके विद्यालय की कक्षा छठी 'अ' का विद्यार्थी हूँ। मेरे पिता एक साधारण दुकानदार हैं। पिछले दिनों उनकी दुकान सील कर दी गई। घर में कमाने वाला अन्य कोई सदस्य नहीं है। हमारा परिवार आर्थिक संकट से गुजर रहा है।
अत: आपसे विनम्र प्रार्थना है, कि आप हमें आर्थिक सहायता प्रदान करने की कृपा करें।
सधन्यवाद,
आपका आज्ञाकारी शिष्य,
क.ख.ग.
कक्षा: छठी 'अ'

2. सेवा में,
जलविभाग अधिकारी,
दिल्ली जल निगम,
दिल्ली।
तिथि:
विषय: पानी के संकट से अवगत करने हेतु।
महोदय,
मै, जगदीश कुमार, दिल्ली के प्रशांत विहार का निवासी हूँ। हमारे इलाके में पेय जल की समस्या लंबे समय से चल रही है। नलों में कभी तो पानी गंदा आता है, तो कभी आता ही नहीं। दिनचर्या के काम करना ही दूभर हो गया है। इलाके में सभी इस समस्या को लेकर चिंतित हैं।
अत: आपसे अनुरोध है, कि इस विषय पर ध्यान दें तथा त्वरित कार्यवाही करें।

आपकी अति कृपा होगी।

धन्यवाद,

भवदीय,
जगदीश कुमार,
प्रशांत विहार
नई दिल्ली

3. परीक्षा भवन,
नई दिल्ली।
तिथि:
प्रिय मित्र रवि,
सप्रेम नमस्ते।
मैं यहाँ कुशलपूर्वक हूँ। आशा है तुम भी सकुशल होगें। जैसा कि तुम जानते ही हो, कि 25 मई से स्कूल का ग्रीष्मावकाश शुरु हो रहा है। मै चाहता हूँ, कि इस बार तुम छुट्टियों में मेरे घर मंसूरी आओ। हम एक साथ यहाँ की सुंदरता का आनंद लेंगे। इन दिनों यहाँ का मौसम काफ़ी अच्छा होता है। हम खूब मस्ती करेंगे, साथ पढ़ेंगे और खेलेंगे।
तुम अपने घर पर माता-पिता से विचार-विमर्श करके जल्द ही मुझे अपने आने की सूचना देना। सोनू को प्यार देना।
पत्रोत्तर की प्रतीक्षा में,
तुम्हारा मित्र,
क.ख.ग.

4. परीक्षा भवन,
नई दिल्ली।
तिथि:
आदरणीय पिताजी,
सादर प्रणाम।
बहुत दिनों से आपका कोई पत्र नहीं मिला। आशा है, आप सकुशल होंगे। आप यह जानकर चिंतित होंगे, कि माँ को पिछले एक सप्ताह से ज्वर आ रहा है। हल्का खाँसी-जुकाम भी है। डॉक्टर ने दवा के साथ आराम की सलाह दी है। भगवान की कृपा से माँ शीघ्र ही अच्छी हो जाएँगी। आप बिल्कुल चिंता न करें।
शेष सब कुशल मंगल है। आप अपना ध्यान रखिएगा।
आपका पुत्र,
क.ख.ग.

5. सेवा में,
संपादक महोदय,
नवभारत टाइम्स,
नई दिल्ली।
तिथि:
विषय: सड़कों की मरम्मत व सफ़ाई हेतु।
महोदय,
सविनय निवेदन यह है, कि मैं कोहाट एन्क्लेव पीतमपुरा क्षेत्र का निवासी हूँ, हमारे मोहल्ले की सड़कें सही ढंग से नहीं बनी हुई हैं, जिससे तेज़ वर्षा होने पर टूट जाती हैं। जगह-जगह पानी इकट्ठा हो जाता है। भरे हुए पानी में मच्छर-मक्खियाँ पैदा होते हैं, जो तरह-तरह की बीमारियों को जन्म देते हैं। अत: आपसे नम्र निवेदन है, कि कृपया नगर निगम के अधिकारियों को इस विषय पर आवश्यक कदम उठाने के लिए निर्देश दिए जाएँ।
सधन्यवाद,
भवदीय,
क.ख.ग.
निवासी
कोहाट एन्क्लेव

अध्याय-27 – निबंध लेखन

1. भारत की महानता ..... प्रकृति ..... ऋतुएँ ..... पर्व..... एकता, भाई चारा ..... वेशभूषाएँ ..... भाषाएँ .....
2. एक विकट समस्या ..... प्रदूषण के प्रकार ..... कारण ..... उसका दिनचर्या पर प्रभाव ..... हमारी ज़िम्मेदारी .....
3. जन्म ..... शिक्षा..... माता-पिता ..... पारिवारिक विवरण ..... देश की आज़ादी में योगदान ..... संघर्ष ..... मृत्यु .....
4. ऐतिहासिक इमारत ..... इतिहास से संबंध ..... रचना ..... बनावट ..... शौर्य की गाथा ..... कहाँ स्थित .... लालकिला नाम का कारण ..... कब और किसके शासन काल में बना ..... निष्कर्ष .....
5. स्वतंत्रता का अर्थ ..... स्वतंत्रता दिवस कब मनाया जाता है .... स्वतंत्रता प्राप्ति हेतु संघर्ष ..... इसका महत्त्व ..... देशप्रेमियों का उल्लेख ..... स्वतंत्रता की रक्षा .....

6. त्योहारों की भूमिका ..... प्रमुख त्योहार ..... रंगों का पर्व.....
कहानी ..... मनाने का तरीका ..... संदेश .....

7. पुस्तकों क महत्त्व ..... ज्ञान का भंडार ..... मनोरंजन .....
समय का सही उपयोग ..... शिक्षा प्राप्ति ..... कर्त्तव्य.....

8. प्रमुख पर्व ..... मनाने का कारण ..... तिथि/माह ..... मनाने
का तरीका ..... रौनक ..... संदेश .....

9. 'त्योहार' के पर्याय ..... जीवन में इनकी भूमिका ..... रोज़
की दिनचर्या से बदलाव ..... त्योहार न होते तो ..... मेल-मिलाप
..... वैर भाव समाप्त .....

10. भ्रष्टाचार का अर्थ ..... कारण ..... दुष्प्रभाव ..... सरकार
का कर्त्तव्य .....।

अध्याय-28 – चित्र वर्णन

छात्र अपनी समझ से स्वयं वाक्य निर्माण करें।

ज्ञान सरोवर हिंदी व्याकरण

YELLOW BIRD PUBLICATIONS PVT. LTD.
EDUCATIONAL PUBLISHER

Regd. Off. : F-214, Laxmi Nagar, Delhi-110 092
Tel. : 91-11-4758 6784, 91-97116 18765
E-mail : yellowbirdpublications@gmail.com • info@yellowbirdpublications.com
Website : www.yellowbirdpublications.com